ओ३म्
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 मार्च 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१११, वर्ष-१२
फाल्गुन, विक्रमी २०७५ (मार्च 2019)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा। इन्द्र चोष्कूयसे वसु ॥ –ऋ० ५। ८।१७। १॥

व्याख्यान–हे ईश्वर! (ऋषिः) सर्वज्ञ और (पूर्वजाः) सब के पूर्व जनक के (एकः) अद्वितीय (ईशानः) ईशनकर्त्ता अर्थात् ईश्वरता करनेहारे, तथा सब से बड़े प्रलयोत्तरकाल में आप ही रहनेवाले (ओजसा) अनन्तपराक्रम से युक्त हो। हे (इन्द्र) महाराजाधिराज! (चोष्कूयसे वसु) सब धन के दाता शीघ्र कृपा का प्रवाह अपने सेवकों पर कर रहे हो। आप अत्यन्त आर्द्रस्वभाव हो।

सम्पादकीय

देवासुर संग्राम

सृष्टि के प्रारम्भ से ही देवासुर संग्राम चलता रहा है और सृष्टि प्रलय तक चलता रहेगा, जब-जब देवता संगठित, सुव्यवस्थित होकर सन्नद्ध रहे हैं तब-तब देवता विजयी हुए हैं और जब-जब देवता असंगठित, अव्यवस्थित (असावधान) होकर आलस्य-प्रमाद-अहंकार के वशीभूत रहे हैं तब-तब असुर विजयी हुए हैं और होंगे। विजयी होने का असुरों का अपना कोई सामर्थ्य नहीं होता है और न रहेगा। पिछले सहस्र (हजार) वर्षों के इतिहास में भी यही हुआ है और अभी भी वर्तमान है। इन सहस्र वर्षों के कालखण्ड में आसुरी वृत्ति के लोगों को प्रथम आक्रान्ता नाम से जाना गया, जो कि अब आंतकी नाम से जाने जा रहे हैं। आक्रान्ता का भी कोई सामर्थ्य नहीं था, चाहे वह मुहम्मद बिन कासिम रहा हो, गजनी रहा हो, गौरी रहा हो, बाबर रहा हो, हुमायूँ या अकबर, तैमूर या अहमद शाह आब्दाली अथवा क्लाइव। वे सभी हमारे पूर्वजों के असंगठित रहने, असावधानी और आलस्य-प्रमादादि के कारण ही इस राष्ट्र को, इसके जीवनमूल्यों को नष्ट कर पाये। जैसे-जैसे हमारे लोगों में जागृति आयी, ऋषिवर दयानन्द ने सत्य सिद्धान्तों का राष्ट्र को बोध कराया, उन सत्यसिद्धान्तों में से राष्ट्रीय जननायक जब कुछ-कुछ सिद्धान्तों को लेकर चले, तब स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। इस स्वतन्त्रा के काल में भी जब-जब राष्ट्र की जनता असंगठित, असावधान अत्यधिक मात्रा में हुई, तब-तब पुनः आतंक ने देश को निगलने का उपक्रम किया और आज भी यह उपक्रम जारी है। आतंक ने एक बार फिर अपना घिनौना पैशाचिक नग्न नृत्य पुलवामा में किया, जब शत्रु आक्रमण के प्रति असावधान प्रवास करते हुए सैनिकों के वाहन को आत्मघाती बम विस्फोट से उड़ा दिया गया। सम्पूर्ण देश में शोक के साथ-साथ आक्रोश की ज्वाला दहकने लगी। भारतीय जनमानस ने सभी क्षुद्र भावनाओं से ऊपर उठकर जब ललकार की तब परिणाम भी देखने को मिला और हमारे देश की वायुसेना ने शौर्यपूर्वक शत्रुदेश में घुसकर आतंक के कुछ अड्डों को नष्ट किया। जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तानी सेना की छटपटाहट-झुंजलाहट सारे विश्व के समक्ष स्पष्ट दिखाई दी, परिणामस्वरूप उनके वायुयानों का प्रत्याक्रमण और हमारी वायुसेना के तीव्र प्रतिरोध के फलस्वरूप जो स्थिति निर्मित हुई, जैसे 'अभिनन्दन' का स्वागत हुआ, यह सब वैश्विक पटल पर भले विभिन्न प्रकार के कूटनीतिक दबाओं में हुआ हो, पुनरपि राष्ट्र का सम्मानजनक स्वरूप ही उभर रहा था। लेकिन उस स्वरूप को विद्रूप करने का कार्य हमारे देश के सत्ताकांक्षी नेताओं के द्वारा किया गया, किया जा रहा है और चुनाव के निकट आते-आते और भी किया जाता रहेगा।

पाठकगणों! आर्य एवं आर्याओं! यह प्राचीनकाल से ही सुनिश्चित सिद्धान्त है कि- सेना और शासक अभिन्न होते हैं, सेना के पराक्रम से प्राप्त विजय को शासक की विजय और सेना की असावधानी से प्राप्त पराजय को शासक की पराजय माना जाता रहा है, तदनुसार ही आतंकवादियों का पैशाचिक कृत्य यदि

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

'मोदी सरकार' के माथे पर कलंक है, तो 'एयर स्ट्राइक से कलंक को धोकर विजयी तिलक भी 'मोदी सरकार' के माथे ही लगेगा, यह भी निश्चित है कि अभी विजय बहुत दूर है, यह आंशिक सफलता है। किन्तु अपनी सत्ता की आकांशा में इतना अन्धा होना किसी को शोभा नहीं देता कि जिससे शत्रु का मनोबल और प्रोपगैण्डा सफल हो या सफल होता दिखने लगे। अभिव्यक्ति की असीमित आजादी का लाभ लीजिए लेकिन इतना भी नहीं कि देश की सेना को ही अपमानित होना पड़े और सेना अपमानित तो सम्पूर्ण देश भी अपमानित होता है। सत्तापक्ष में बैठे नेताओं को भी चाहिए कि आप सेना के मनोबल बढ़ाने के बहाने अपने चुनावी गणित के समीकरण न बनाने लग जाइए। चुनावी संघर्ष घर का संघर्ष है इसे घर के मुद्दों पर लड़िए और आतंक से युद्ध बाहर और भीतर दोनों ओर है, उसे उसी प्रकार नष्ट कीजिए।

आर्य! आर्याओं हम सभी यही चाहते हैं। यही सत्य है, और यही होना भी चाहिए कि सभी अपनी-अपनी मर्यादाओं में रहें, चाहे वह सत्तापक्ष हो या विपक्ष। लेकिन याद रहे यह मर्यादा वही सिखा सकता है जो मर्यादा पुरूषोत्तम को जानता हो और एक आर्य ही मर्यादा पुरूषोत्तम को जानता है, इसलिए वही मर्यादा में रखने का पैरोकार बन सकता है किन्तु वह भी तब जब 'आर्य' आज के सन्दर्भ में करोंड़ों की संख्या में हों। आर्य की बढ़ती ही अमर्यादा को नष्ट करेगी। आर्य की बढ़ती ही आतंक का नाश करेगी। आर्य की बढ़ती ही असुरों का नाश करेगी।

अन्यथा हमें फिर-फिर पश्चाताप करते ही रहना पड़ेगा क्योंकि एक आर्य ही जानता है- **''शत्रु शेषं न रक्षयेत्।''**

आर्य महासंघ का प्रान्तीय अधिवेशन-उत्तर प्रदेश

दिनांक 24 फरवरी 2019 को आर्य महासंघ का प्रथम प्रांतीय अधिवेशन (कार्यकर्ता सम्मेलन) जनता वैदिक कॉलेज महर्षि दयानंद सभागार में आयोजित हुआ। प्रातः काल वैदिक यज्ञ व राष्ट्रीय प्रार्थना के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ। आर्य महासंघ के इस प्रथम प्रांतीय अधिवेशन में परम पूज्य आचार्य श्री परमदेव जी मीमांसक और आर्य महासंघ के अध्यक्ष आचार्य हनुमत् प्रसाद उपाध्याय जी, महासचिव आचार्य सतीश जी, उपाध्यक्ष आचार्य अश्वनी जी, सचिव डॉ. सुनील आर्य जी, राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य जितेंद्र जी, राष्ट्रीय आर्य संरक्षणी सभा के अध्यक्ष आचार्य संजीव जी, राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष आर्य वीरेंद्र छारा, राष्ट्रीय अध्यक्ष छात्र सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य राजेश जी, उत्तर प्रदेश आर्य निर्मात्री सभा के अध्यक्ष आर्य राजेंद्र जी एवं प्रांतीय महासचिव आर्य उपेंद्र जी, निर्मात्री सभा जनपद बागपत के अध्यक्ष आर्य सहदेव जी एवं अन्य अनेक आर्य समाज व आर्य संगठनों के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में आर्य महासंघ के महासचिव आचार्य सतीश जी ने आर्य महासंघ के साथ संगठित होकर चलने का आह्वान किया जिससे आर्यों के पक्ष को राष्ट्र के सम्मुख रखा जा सके और राष्ट्र में उसे सुना जा सके। आचार्य राजेश जी राष्ट्रीय अध्यक्ष छात्र सभा ने सभा को संबोधित करते हुए राष्ट्र के छात्रों में व्याप्त नशे व व्यभिचार पर गहरी चिंता व्यक्त की। राष्ट्र के छात्र अनेकों प्रकार के नशे जैसे- बीड़ी, सिगरेट, शराब, स्मैक, हीरोइन, म्याऊं-म्याऊं आदि मादक द्रव्यों का सेवन कर रहे हैं तथा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में अपने भविष्य को बर्बाद कर रहे हैं। आचार्य राजेश जी ने राष्ट्र के सभी छात्रों को राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा से जुड़ने का आह्वान किया ताकि उन्हें सभी प्रकार से व्यसनों से मुक्त करके एक स्वस्थ, सुदृढ़, राष्ट्रभक्त अर्थात् सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र के नागरिक बनाया जा सके।

आर्य वीरेंद्र छारा राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा ने सभी युवाओं को क्षत्रिय सभा से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करने का आह्वान किया। राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के युवाओं द्वारा रक्षा करने का दायित्व अपने कंधे पर लेकर समाज में व्याप्त बुराइयों का जोरदार खंडन करके सत्य सनातन वैदिक सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा कृत संकल्प है। राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा वैदिक विद्वानों की रक्षा और वैदिक सिद्धांतों पर चलने वाले आर्यों की सुरक्षा के लिए कृत संकल्पित है। आर्य संरक्षिणी सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य संजीव जी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए बताया कि आदि काल से ही समाज के लोगों की रक्षा करने का कार्य क्षत्रिय करते हैं। परंतु उससे भी अधिक लोगों को विद्या देकर उनका संरक्षण का कार्य भी विद्वानों के द्वारा होता रहा है परंतु आधुनिक काल में हमारी प्राचीन पद्धति अस्त-व्यस्त हो गई है और वैदिक संस्कृति के स्थान पर पाश्चात्य संस्कृति के कारण आज समाज पूरी तरह क्षीण हो गया है। आज आवश्यकता है अपनी संस्कृति अर्थात् वैदिक सिद्धांतों को समाज में स्थापित किया जाए उसके लिए राष्ट्रीय आर्य संरक्षिणी सभा के विद्वान अपने आर्य अर्थात् वेदों की विद्या के संरक्षण का कार्य कर रहे हैं। समाज को पुनः परोपकारी, निस्वार्थी ईश्वर का सच्चा उपासक बनाने के लिए संरक्षिणी सभा के विद्वान आर्य समाज, आर्य परिवारों में आर्यों का संरक्षण करने का भगीरथ प्रयास कर रही है। आचार्य जी ने सभी आर्यों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का व परिवार सहित दोनों समय संध्या व कम से कम पाक्षिक यज्ञ करने का संकल्प दिलाया तथा सभी परिवारों में बालकों के सोलह संस्कारों को विधिवत् करना सुनिश्चित हो ऐसा भी संकल्प दिलवाया।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य जितेंद्र जी ने उपस्थित आर्यों को पुलवामा में बलिदान हुए सैनिकों को याद दिलाया एवं उस नरसंहार को करने वाले आतंकवादी युवक आदिल अहमद डार की विक्षिप्त मानसिकता को परिभाषित करते हुए बताया कि एक गलत विद्या के प्रभाव में आकर अधर्म को धर्म मान कर अपनी जान देकर अनेकों सैनिकों के नरसंहार को जन्नत जाने का रास्ता उसने समझा। ऐसी विकृत चरमपंथी विचारधारा इस समाज में तेजी से फैल रही है। संसार भर में ऐसी विकृत मानसिकता के कारण अशांति और अधर्म बढ़ रहा है जो धर्म का चोला ओढ़े हुए हैं। यदि ऐसी विकृत विचारधाराओं और अधर्म को रोकना है तो हम सब को अपने वैदिक धर्म की श्रेष्ठ परंपराओं को अर्थात् वेद विद्या को तेजी से बढ़ाना पड़ेगा। इसके लिए आचार्य श्रेष्ठ परम देव जी मीमांसक ने उस वेद विद्या को बहुत सरल स्वरूप में हम सब के लिए एक नियमित पाठ्यक्रम के रूप में विकसित किया एवं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा उस दो दिवसीय पाठ्यक्रम को लघु गुरुकुल के रूप में पूरे राष्ट्र में चला रही है। आप सभी राष्ट्रवादी, संस्कृतिप्रिय अपनी वेद विद्या को सीखने के लिए राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय लघु गुरुकुल में आकर इस पावन

शेष अगले पृष्ठ पर

विद्या को सीखें और अपने जीवन को श्रेष्ठ (आर्य) बनाएं।

आर्य महासंघ के अध्यक्ष आचार्य हनुमत प्रसाद जी ने उपस्थित सभी आर्य संगठनों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए समझाया कि हम सब को एकजुट होकर उस परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत वेद के सिद्धांतों को समाज में स्थापित करना होगा। आर्य महासंघ अपने सभी संगठनों राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा, राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा, राष्ट्रीय आर्य संरक्षिणी सभा, राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा आदि को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग एवं मार्गदर्शन करता रहेगा।

आज आर्य महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य श्री हनुमत प्रसाद उपाध्याय जी ने महासंघ के पदाधिकारियों को मनोनीत किया। आचार्य सतीश जी को महासचिव, आचार्य अश्वनी जी व डॉ. रमेश बावा जी को उपाध्यक्ष, आर्य जसवीर जी को कोषाध्यक्ष, आचार्य अशोक पाल जी राष्ट्रीय प्रवक्ता आर्य महासंघ एवं डॉक्टर सुनील आर्य को सचिव, आचार्य वेद प्रकाश को कोष-सचिव पद पर मनोनीत किया गया। कार्यक्रम में अपने संबोधन में उपस्थित आर्य संगठनों के पदाधिकारियों एवं आर्यों के जनसमूह को संबोधित करते हुए मुख्य आचार्य श्री परमदेव जी मीमांसक ने सभी का अभिवादन किया एवं सभी के अविरल संघर्ष की सराहना की।

आचार्य श्रेष्ठ मुख्य आचार्य जी ने अपने हृदय की वेदना को व्यक्त करते हुए बताया कि अब से 1000 वर्ष पहले तक इस भारत भूमि अर्थात् आज का भारत पाकिस्तान बांग्लादेश मिलाकर कोई भी विधर्मी नहीं था अर्थात् सभी सनातन वैदिक धर्म को मानने वाले थे। परंतु इन 1000 वर्षों में 50 करोड़ लोग अपने सनातन धर्म को छोड़कर विधर्मी अर्थात ईसाई, मुसलमान आदि हो गए। इसका कारण हमारे पूर्वजों का विद्या से विमुक्त हो जाना रहा। इसके बाद अंग्रेजों के काल में महर्षि दयानंद जी ने यहां आकर उन सभी मतों इस्लाम, ईसाई, जैन, बौद्ध, शैव, वैष्णव आदि मत पंथ संप्रदाय में व्याप्त अंधविश्वास पाखंड और आडम्बर की झूठी पोल खोल कर रख दी और सत्य सनातन वैदिक धर्म का ध्वज बुलंद किया जिससे कि मानव का निर्माण हो सके। ऋषि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में वैदिक सिद्धांतों को समझा कर लोगों को एक ऐसा ग्रंथ दे दिया जिसे पढ़कर एक व्यक्ति मुसलमान-ईसाई-यहूदी-हिंदू से आर्य बन सकता है। आचार्य जी ने सभी को आंदोलित करते हुए बताया कि वेद के सिद्धांत जन जन तक पहुंचाने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना होगा। अपने सभी लोगों को सिद्धांत देकर उन्हें आर्य बनाना होगा तभी इस राष्ट्र में एकता अखंडता राष्ट्रभक्ति स्थापित होकर राम राज्य आएगा। जब तक हम सब मिलकर ऐसा समाज नहीं बना लेते तब तक विधर्मी विचारधाराएं पुलवामा जैसे हत्याकांड करते रहेंगे।

मुजफ्फरनगर, बिजनौर, गाजियाबाद, मोदीनगर, शाहजहांपुर, आजमगढ़, मेरठ व अन्य जनपदों से भी हजारों की संख्या में आर्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में आचार्य समर भानु, देवमुनि वानप्रस्थीजी, धर्मपाल जी चेयरमैन, श्री हरपाल जी निरपुडा, नरेंद्र जी दाहा, श्री कपिल वैदिक जी, पुष्पेंद्र जी, राहुल जी, सुधीर जी, सत्यवीर जी व क्षेत्र के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

गौवंश की महत्ता

-आर्य सोनू हरसौला, कैथल

गाय को वैदिक संस्कृति का प्राण कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं है। वैदिक काल से आधुनिक समाज तक गाय ही सर्वप्रमुख प्राणी है जिसे आर्यों द्वारा (अब वैज्ञानिकों द्वारा भी) सबसे उपयोगी माना गया है। गौ महिमा का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वैदिक काल में गुरुदक्षिणा में, पुत्री को उपहार में, यज्ञोपरान्त दान में गौ को दिया जाता था। यहां तक कि गौ-रक्षा हेतु युद्ध तक लड़े जाते थे। किन्तु धरती पर तो और बहुत प्राणियों का आस्तित्व है जो मनुष्य के लिए उपयोगी हैं किन्तु गाय को सर्वश्रेष्ठ स्थान क्यों? इसका उत्तर यह है कि हमारे महान वैज्ञनिक पूर्वजों ने गौ के दूध, घी, गोबर और मूत्र पर अनुसन्धान किया और इसे अन्य जीवों से श्रेष्ठ और उपयोगी पाया।

गाय का घी स्मृति मेधाशक्ति के लिए प्रशस्त, अग्नि-दीपक, बलवर्धक, आयुष्य, शुक्रजनक, नेत्रों के लिए हितकर, बालक एवं वृद्धों के लिए लाभकरी, सन्तानजनक, कान्तिदायी, सौकुमार्य तथा शरीर को स्थिर करने वाला है।

गौ से यह असंख्य लाभ अनन्त काल तक प्राप्त होते रहें इसलिए गौ-वध को नैतिक रूप से वर्णित करने हेतु महाभारत बाद इसे बहुत लोगों द्वारा माता की संज्ञा प्रदान की गई और गाय को गौ माता कहा जाने लगा। किन्तु विधर्मियों के भारत आगमन और आधिपत्य में गाय के लाभों की अनदेखी की गई और उसका मांसभक्षण किया जाने लगा, तदुपरान्त ब्रिटिश काल और वर्तमान समय में भी जारी है। आज तो राजनैतिक रोटियां सेकने का ज्वलन्त मुद्दा बन चुकी है गाय।

फिर महर्षि दयानन्द जैसे तार्किक महापुरुष का अर्विभाव हुआ और उन्होंने भारतवासियों का ध्यान फिर गौ लाभ की ओर आकृष्ट किया और भारतीय संस्कृति तथा कृषि का आधार गाय को बताया। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास में महर्षि गाय का महत्व इस प्रकार समझाते हैं। वे लिखते है- जिसमें उपकारक प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर सहस्र छः सौ मनुष्यों को सुख पहुंचता है, वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दें। जैसे किसी गाय से 20 सेर और किसी से 2 सेर दूध प्रतिदिन होवे उसका मध्यभाग 11 सेर प्रत्येक गाय से दुध होता है। कोई गाय 18 और कोई छः महीने दूध देती है तो उसका मध्य भाग 12 महीने हुआ। अब प्रत्येक गाय के जन्म भर के दूध से 24960 (चौबीस सहस्र नौ सौ साठ) मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। उसके छः बछियाँ, छः बछड़े होते हैं। उनमें से दो मर भी जाएँ तो भी दस रहें। उनमें से पांच बछडियों के जन्म भर के दूध को मिलाकर 124800 (एक लाख चोबीस सहस्र आठ सौ) मनुष्य तृप्त हो सकते हैं। अब रहे पांच बैल वे जन्मभर में पाच सहस्र मन अन्न न्यून से न्यून उत्पन्न कर सकते हैं। उस अन्न में से प्रत्येक मनुष्य तीन पाव खावे तो अढ़ाई लाख मनुष्यों की तृप्ति होती है। दूध और अन्न को मिला कर 374800 (तीन लाख चौहत्तर आठ सौ) मनुष्य तृप्त होते हैं। दोनों संख्या मिलाकर एक गाय की एक पीढ़ी में 399760 (तीन लाख निन्यानवे सहस्र सात सौ साठ) मनुष्य एक बार फलित होते हैं और पीढ़ी पर पीढ़ी बढ़ा कर लेखा करें तो असंख्य मनुष्यों का पालन होता है। इससे भिन्न बैलगाड़ी

शेष अगले पृष्ठ पर

सवारी भार उठाने आदि कर्मों से मनुष्यों के बड़े उपकारक होते हैं। वैसे भी गाय दूध में अधिक उपकारक होती है। परन्तु जैसे बैल उपकारक होते हैं वैसे भैंसे भी हैं। परन्तु गाय के दूध घी से जितने बुद्धिवृद्धि से लाभ होते हैं उतने भैंस के दूध से नहीं। इससे मुख्योपकारक आर्यों ने गाय को गिना है।

भैंस के दूध एवं घी से जिन बीमारियों के होने की आशंका रहती है, गौदुग्ध से वह नहीं रहती। न केवल भैंस अपितु विदेशी नस्ल की गाय का दूध भी बहुत बिमारियां पैदा करता है। जैसे- डायबिटीज आदि। आज अनुसन्धान के लिए विदेश में भी भारतीय नस्ल की गायों की मांग बढ़ती जा रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि के मद्देनजर देसी नस्ल की भारतीय गायों पर अनुसन्धान की दुनिया के प्रमुख देशों की रूची बढ़ी है। गायों में अधिक तापमान सहन करने की अद्‌भुत क्षमता, कीट तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं पौष्टिक तत्वों की कम जरूरत और रख-रखाव में आसान होने के कारण दुनिया के प्रमुख राष्ट्र इसका आयात कर रहे हैं। इनमें अमेरिका, आस्ट्रेलिया और ब्राजील जैसे देश शामिल हैं। ये देश इन गायों पर अनुसन्धान कर अपने यहां के अनुकूल उन्नत नस्ल की गाय विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं।

आस्ट्रेलिया में की गई गाय के दूध पर एक रिसर्च के बाद यह कहा गया कि गौदुग्ध से एच.आई.वी. वायरस पर असर करने वाली क्रीम या जैल बनाया जा सकता है। दरअसल गाय के दूध मे एण्टीबॉडी यानि रोग प्रतिरक्षी होते हैं। वायरस जब शरीर पर हमला करके प्रतिरक्षी तन्त्र को कमजोर करने लगता है तो गाय के दूध में मौजूद एन्टीबॉडी इससे लड़ सकते हैं।

अमेरिकी जर्नल (नेचर) में प्रकाशित एक रिपोर्ट में भी ऐसा कहा गया है कि गौदुग्ध की प्रतिरोधक क्षमता से एड्स के वायरस एचआईवी के असर को 42 दिनों में 20 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। इसके लिए वैज्ञानिकों ने चार गायों को प्रयोग के लिए चुना और उन्हे एचआईवी के दो-दो इन्जेक्सन लगाए। एक महीने बाद उनमें प्रतिरक्षी कोशिकाएं विकसित होने लगी। अध्ययन में कहा गया कि 381 दिनों में ये एन्टीबॉडी एचआईवी के असर को 96 प्रतिशत तक खत्म कर सकते हैं। अमेरिका के नेशलन इन्स्टीट्यूट ऑफ हेल्थ ने इस जानकारी को काफी उपयोगी बताया है।

चौधरी सुखन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि वि.वि. में पशु चिकित्सा सूक्ष्म जैविकी विभाग के शोधार्थियों ने बताया कि पहाड़ी गाय की नस्ल के दूध में ए-2 बीटा प्रोटीन ज्यादा मात्रा में पाया जाता है जो सेहत के लिए उत्तम है। यह पहाड़ी गायों पर किए अध्ययन से ज्ञात हुआ। लगभग 97 प्रतिशत मामलों में यह पाया गया कि इन गायों के दूध में ए-2 बीटा प्रोटीन से हृदय रोग, मधुमेह तथा मानसिक रोग के खिलाफ सुरक्षा प्राप्त होती है। यह प्रोटीन होलस्टीन व जर्सी गायों में नहीं पाया जाता। बत्रा हॉस्पिटल एण्ड मेडिकल रिसर्च सैन्टर के आयुर्वेद के विभागाध्यक्ष डा. मेहर सिंह के अनुसार गाय का दूध भैंस की तुलना में मस्तिष्क के लिए बेहतर होता है। गोदुग्ध में उपलब्ध स्वर्ण तत्व शरीर को मजबूत, आन्तों की रक्षा, दिमाग को तेज व शिशुओं को एलर्जी से बचाता है। गाय के खीस को एक हफ्ता तक पीने से वर्षों पुरानी टीबी खत्म हो जाती है। किन्तु गौदुग्ध अन्य जीवों के मुकाबले अति उत्तम क्यों है? इसका उत्तर हमें यूएसए के कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक "Cow is Wonderfull Laboratory" में मिलता है, जो इस प्रकार है। इस पुस्तक में बताया गया है कि समस्त जन्तुओं में से गाय ही एकमात्र दुग्धधारी है जिसकी आन्त लगभग 180 फुट (2160 ईंच) लम्बी है। जिस कारण वह जो खाती है, वह अन्तिम छोर तक जाता है। जैसे मक्खन निकालने वाली मशीन में जितनी अधिक गरारियां लगी होंगी, उससे उतना ही उत्तम मक्खन निकलता है। वैसे ही ईश्वर ने भी शरीरिक संरचना में सबसे लम्बी आन्त गाय को दी है। जिससे उसका दूध अन्य दुग्धधारी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है। गाय की रीढ़ की हड्डी में उपस्थित सूर्यकेतु नाड़ी सूर्य की विशेष किरणों को ग्रहण कर स्वर्ण तत्व का निर्माण करती है, इस कारण गौदुग्ध व घी स्वर्ण तत्व के कारण पीले रंग का होता है।

जूनागढ़ यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक जो लम्बे समय से गिर गायों पर शोध कर रहे थे, को गौमुत्र में स्वर्ण तत्व मिला है। करीब चार साल तक 400 गायों पर लम्बी रिसर्च के बाद वैज्ञानिकों ने बताया कि इन गायों के मूत्र मे 3 से 10 एमजी तक सोना मिला। शोध रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि गौमूत्र में लगभग 5100 पदार्थ मिले हैं जिनमें से 388 पदार्थ ऐसे हैं जो बहुत बीमारियों को खत्म करने की क्षमता रखते हैं।

आर्य छात्र सभा प्रचारक विद्यालय में

आर्य छात्र सभा प्रचारक प्रशिक्षण कक्षा

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	06 मार्च	दिन-बुधवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-शतभिषा
पूर्णिमा	21 मार्च	दिन-गुरुवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-उ.फाल्गुनी
अमावस्या	05 अप्रैल	दिन-शुक्रवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-रेवती
पूर्णिमा	19 अप्रैल	दिन-शुक्रवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-चित्रा

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

(प्र०)- जब-जब सभा आदि व्यवहारों में जावे, तब कैसे-कैसे वर्ते ?

(उ०)-जब सभा में जावे, तब दृढ़ निश्चय कर लेवे कि मैं सत्य को जिताऊं, और असत्य को हराऊँगा। अभिमान न रक्खे, अपने को बड़ा न माने। अपनी बात का कोई खण्डन करे, उस पर क्रुद्ध वा अप्रसन्न न हो। जो कोई कहे, उसके वचन को ध्यान देकर सुनके जो उसमें कुछ असत्य भान हो, तो उस अंश का खण्डन अवश्य करे। और जो सत्य हो तो प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें, बढ़ाई-छोटाई न गिने, व्यर्थ बकवाद न करें, कभी मिथ्या का पक्ष न करे, और सत्य को कदापि न छोड़े।

ऐसी रीति से बैठे वा उठे कि जिससे किसी को बुरा विदित न हो। सर्वहित पर दृष्टि रक्खे, जिससे सत्य की बढ़ती और असत्य का नाश हो, उसको करे। सज्जनों का संग करे, और दुष्टों से अलग रहे। जो-जो प्रतिज्ञा करे, वह-वह सत्य से विरुद्ध न हो, और उसको सर्वदा यथावत् पूरी करे, इत्यादि कर्म सब सभा आदि व्यवहारों में करें।

(प्र०)-'जड़बुद्धि' और 'तीव्रबुद्धि' किसको कहते हैं ?

(उ०)-जो आप तो समझ ही न सके, परन्तु दूसरे के समझाने से भी न समझे, वह **'जड़बुद्धि'।** और जो समझाने से झटपट समझे, और थोड़े ही समझाने से बहुत समझ जावे, वह **'तीव्रबुद्धि'** कहाता है। यहाँ महाजड़ और विद्वान् का दृष्टान्त सुनो-

दृष्टान्त-कहीं एक रामदास वैरागी का चेला गोपालदास पाठ करता-करता कुएँ पर पानी भरने को गया। वहाँ एक पण्डित बैठा था। उसने अशुद्ध पाठ सुनकर कहा कि-तू **"स्त्री गनेसाय नम"** ऐसा घोकता है, सो शुद्ध नहीं है। किन्तु **"श्री गणेशाय नमः"** ऐसा शुद्ध पाठ कर। तब वह बोला कि-'मेरे महन्तजी बड़े पण्डित हैं। उन्होंने जैसा मुझको सुनाया है, वैसा ही घोखूंगा।' उसने पानी भरकर अपने गुरु के पास जाके कहा कि-'महाराज जी! एक बम्मन मेरे पाठ को असुद्ध बतलाता है'। तब खाकी जी ने चेलों से कहा-'कि उस बम्मन को यहाँ बुला लाओ'। वह गुरु का फटकारा मेरे चेलों को क्यों बहकाता, और शुद्ध का अशुद्ध क्यों बतलाता है? चेला गया, पण्डितजी को बुला लाया।

पण्डित से महन्त बोले कि-'तू इसके कितने प्रकार के पाठ जानता है?' पण्डित ने कहा कि-'एक प्रकार का'। महन्त जी ने कहा कि-'तू कुछ भी नहीं जानता। देख, मैं तीन प्रकार का पाठ जानता हूँ। एक-**स्त्री गनेसाजनम।** दूसरा- **स्त्री गनेसापनम,** तीसरा- **स्त्री गनेसायनम।'** **(पण्डित)** महन्त जी! तुम्हारे पाठ में पाँच दोष हैं। प्रथम-श का स, दूसरा-ण का न, तीसरा-शा का सा, चौथा-य का ज प बोलना, और [पांचवाँ] विसर्जनीय का न बोलना, ये पाँच अशुद्धियाँ हैं। महन्तजी बोले-'चलबे, गुरु के बड़े घर में सब शुद्ध है'।

पण्डित चुपकर चले आये, क्योंकि-

"सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रकथितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्"

[नीतिशतक श्लोक ११]

सब का औषध [शास्त्र में कहा] है, परन्तु शठ मनुष्यों का औषध कोई भी नहीं। ऐसे हठी मनुष्यों से अलग रहे। जो वे सुधरा चाहें, तो विद्वान् उपदेश करके उनको अवश्य सुधारें।

[कैसी आज्ञा नहीं माननी चाहिये?]

(प्र०)-जो माता पिता आचार्य और अतिथि अधर्म करें और कराने का उपदेश करें, तो मानना चाहिए वा नहीं।

(उ०)-कदापि नहीं। कुमाता कुपिता सन्तानों को बूरे उपदेश करते हैं कि बेटा! बिटिया! तेरा विवाह शीघ्र कर देंगे, किसी की चीज पावे, तो उठा लाना। कोई एक गाली दे, तो उसको तू पचास गाली दे। लड़ाई-झगड़ा, खेल, चोरी-जारी, मिथ्याभाषण, भांग मद्य गांजा चरस अफीम खाना-पीना आदि कर्म करने में कुछ दोष नहीं, क्योंकि अपनी कुलपरम्परा है। सुनो प्रमाण-**'कुलधर्मः सनातनः'।** जो कुल में धर्म पहिले से चला आता है, उसके करने में कुछ भी दोष नहीं।

(सुसन्तान आह)-जो तुमने शीघ्र विवाह करना, किसी की चीज़ उठा लाना आदि कर्म कहे, वे दुष्ट मनुष्यों के काम हैं, श्रेष्ठों के नहीं। किन्तु श्रेष्ठ तो ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्या पढ़कर स्वयंवर अर्थात् पूर्ण युवावस्था में दोनों की प्रसन्नतापूर्वक विवाह करना। किसी की करोड़ों की चीज जंगल में भी पड़ी देखकर कभी ग्रहण करने की मन में भी इच्छा न करना, आदि कर्म किया करते हैं। जो-जो तुम्हारे उत्तम कर्म और उपदेश हैं, उन-उन को तो हम ग्रहण करते हैं, अन्य को नहीं। परन्तु तुम कैसे ही हो, हमको तन मन धन से तुम्हारी सेवा करना परमधर्म है। क्योंकि जैसी तुमने बाल्यावस्था में हमारी सेवा की है, वैसी तुम्हारी सेवा हम क्यों न करें ?

(कुसन्तान आह)-श्रेष्ठ माता पिता आचार्य अतिथियों से अभागे सन्तान कहते हैं कि-'हमको खूब खिलाओ-पिलाओ। खेलने दो, हमारे लिए कमाया करो। जब तुम मर जाओगे, तब हम ही को सब काम करना पड़ेगा। शीघ्र विवाह कर दो, नहीं तो हम इधर-उधर लीला करेंगे ही। बाग में जाके नाच तमाशा करेंगे, वा वैरागी हो जाएँगे। पढ़ने में बड़ा कष्ट होता है, हमको पढ़के क्या करना है? क्योंकि हमारी सेवा करने वाले तुम तो बने ही हो। हमको सैल-सपट्टा, सवारी-शिकारी, नाच, खाने-पीने, ओढ़ने-पहनने के लिए खूब दिया करो। नहीं तो जब हम जवान होंगे, तब तुमको समझ लेंगे। **'दण्डादण्डि, नखानखि, केशाकेशि, मुष्टामुष्टि, युद्धमेव भविष्यत्यन्यत् किम्**-ऐसे-ऐसे सन्तान दुष्ट कहाते हैं।

-क्रमशः ....

॥ ओम् ॥

आर्य महासंघ

(कार्यालयः २२३-२२४, पॉकेट-२६, सैक्टर-२४, रोहिणी, दिल्ली-११००८५, भारत)
का

प्रान्तीय अधिवेशन, दिल्ली प्रान्त

रविवार, 07 अप्रैल 2019, दोपहर 12 बजे

स्थान

मावलंकर हॉल, कांस्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001

(निकट पटेल चौक मैट्रो स्टेशन)

आर्यों/आर्याओं संगठन की महत्ता को सभी जानते हैं, किंतु यह दुर्भाग्य ही है कि जानते हुए भी आर्य बिखरे हुए हैं। परिस्थितियों की चुनौती प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है इससे पूर्व की यह दुर्दैव हमें उठने योग्य भी न छोड़े, हम सब उठें और उस दिन हेतु आह्वान करें जब आर्यों के सभी छोटे बड़े संगठन आर्य महासंघ के अंतर्गत राष्ट्रोत्थान कर दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदल दें। इसी निमित्त आर्य महासंघ प्रांतीय अधिवेशन आहूत कर रहा है जिसमें आप सभी का पहुंचना अति आवश्यक है।

सम्पर्क सूत्र : 8468838494, 9350945482, 9313566005, 9212721141

20 फरवरी–21 मार्च–2019 **फाल्गुन** ऋतु- शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		मघा कृष्ण प्रतिपदा 20 फरवरी	उ.फाल्गुनी कृष्ण द्वितीया 21 फरवरी	हस्त कृष्ण तृतीया 22 फरवरी	चित्रा कृष्ण चतुर्थी/पंचमी 23 फरवरी	स्वाती कृष्ण षष्ठी 24 फरवरी
विशाखा कृष्ण सप्तमी 25 फरवरी	अनुराधा कृष्ण अष्टमी 26 फरवरी	ज्येष्ठा कृष्ण नवमी 27 फरवरी	मूल कृष्ण दशमी 28 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण दशमी 1 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण एकादशी 2 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण द्वादशी 3 मार्च
श्रवण त्रयोदशी 4 मार्च	धनिष्ठा शुक्ल चतुर्दशी 5 मार्च	शतभिषा कृष्ण अमावस्या 6 मार्च	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल प्रतिपदा 7 मार्च	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल द्वितीया 8 मार्च	रेवती शुक्ल तृतीया 9 मार्च	अश्विनी शुक्ल चतुर्थी 10 मार्च
भरणी कृष्ण पंचमी 11 मार्च	कृतिका शुक्ल षष्ठी 12 मार्च	रोहिणी शुक्ल सप्तमी 13 मार्च	मृगाशिरा शुक्ल अष्टमी 14 मार्च	आर्द्रा शुक्ल नवमी 15 मार्च	पुनर्वसु शुक्ल दशमी 16 मार्च	पुष्य शुक्ल एकादशी 17 मार्च
आश्लेषा शुक्ल द्वादशी 18 मार्च	मघा त्रयोदशी 19 मार्च	पू॰ फाल्गुनी चतुर्दशी 20 मार्च	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल पूर्णिमा 21 मार्च			

22 मार्च–19 अप्रैल 2019 **चैत्र** ऋतु- वसन्त

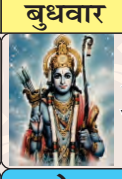

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसँवत्सर प्रारम्भ आर्य समाज स्थापना दिवस 6 अप्रैल		श्रीरामचन्द्र जयन्ती चैत्र शुक्ल नवमी 14 अप्रैल	हस्त कृष्ण प्रतिपदा/द्वितिया 22 मार्च	चित्रा कृष्ण तृतीया 23 मार्च	स्वाती कृष्ण चतुर्थी 24 मार्च
विशाखा कृष्ण पंचमी 25 मार्च	अनुराधा कृष्ण षष्ठी 26 मार्च	ज्येष्ठा कृष्ण सप्तमी 27 मार्च	मूल कृष्ण अष्टमी 28 मार्च	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण नवमी 29 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण दशमी 30 मार्च	श्रवण कृष्ण एकादशी 31 मार्च
धनिष्ठा कृष्ण द्वादशी 1 अप्रैल	शतभिषा कृष्ण द्वादशी 2 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण त्रयोदशी 3 अप्रैल	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण चतुर्दशी 4 अप्रैल	रेवती कृष्ण अमावस्या 5 अप्रैल	रेवती शुक्ल प्रतिपदा 6 अप्रैल	अश्विनी शुक्ल द्वितीया 7 अप्रैल
भरणी शुक्ल तृतीया 8 अप्रैल	कृतिका शुक्ल चतुर्थी 9 अप्रैल	रोहिणी शुक्ल पंचमी 10 अप्रैल	मृगाशिरा शुक्ल षष्ठी 11 अप्रैल	आर्द्रा शुक्ल सप्तमी 12 अप्रैल	पुनर्वसु शुक्ल अष्टमी 13 अप्रैल	पुष्य/आश्लेषा शुक्ल नवमी 14 अप्रैल
मघा शुक्ल दशमी/एकादशी 15 अप्रैल	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल द्वादशी 16 अप्रैल	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल त्रयोदशी 17 अप्रैल	हस्त शुक्ल चतुर्दशी 18 अप्रैल	चित्रा शुक्ल पूर्णिमा 19 अप्रैल	 23 मार्च शहीदी दिवस	

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

15. The Samaj shall perform Vedic Sanskaras, such as antyeshti (last rites), etc.

16. The Vedas and the ancient Arsha Granthas, shall be studied and taught in the Arya Vidyalaya, and true and right training calculated to improve males and females alone shall be imparted on Vedic lines.

17. In the interests of the country, two kinds of reform shall receive thorough attention in the Samaj, spiritual and temporal. There shall be uplifting in these two directions, for the promotion of purity; indeed reform conducive to the welfare of entire mankind shall be undertaken by the Samaj.18. The Samaj shall believe in what is right and just only i. e., in the true Vedic Dharma, destitute of all element of partiality, and standing the crucial test of all the pramans-ocular demonstration and so forth. It shall never have faith in anything else, so far as possible.

19. The Samaj shall send learned men of approved character everywhere to preach truth.

20. In the interest of education of both males and females, separate schools shall be established, if possible in all place. In the seminaries for female the work of teaching and that of serving the students shall be carried on by females only and in the schools for males, the responsibility for doing the same shall be with males. Never shall this rule be infringes.

21. The school shall be looked after and maintained as the president of the Samaj shall direct.

22. The president and other members of the Samaj shall, for the maintenance of mutual goodwill, keep their minds free from all feeling of pride, wilfulness, hate, anger, etc., and divested of such vices, they shall, being free of enmity and pure of heart, love one another, one as loves his own self.

23. when deliberating on a subject, that which has been, as the fruit of his deliberation, ascertained to be in thorough accord with the principles of justice and universal benevolence and absolutely true, the same shall be made known to the members and relieved in by them. Acting thus is termed rising above bias or prejudice.

24. He who conforms his conduct to the principles specified, and is righteous and edowed with true virtues, the same shall be admitted to the superior order of the Arya Samaj, while who is otherwise than this shall belong to the ordinary cadre of the Samaj. But the individual who openly appears to be utterly depraved and debased, shall be expelled from the Samaj. Such a step, however, shall not be dictated by prejudice, on the contrary both the things specified shall be done after due deliberation by the exalted members of the Samaj and not otherwise.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

मुझे अपने धर्म, ईश्वर, देश, देशभक्ति, चरित्र, संस्कार आदि के बारे में जानने का मौका मिला। इससे पहले मैं आधुनिकता की चादर ओढ़े अपने प्राचीन धर्म, संस्कार, चरित्र इत्यादि को भूलकर व्यवहार करता था। मगर अब मैं अभिषेक आर्य, गर्व से कहूँगा। मेरे पूर्वज आर्य थे, मैं आर्य हूँ, मैं आर्य हमेशा रहूँगा और आने वाले भविष्य के बच्चों को तथा आज के लोगों को जो अपने प्राचीनतम गौरवमयी परम्परा को भूल चूके हैं, उन्हें जगा दूँगा। गर्व से कहता हूँ मैं आर्य हूँ। मैं इस राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा में योगदान अपने छात्र को आर्य बनाकर करूंगा। क्योंकि मेरा व्यवसाय शिक्षक का है और मैं शिक्षक होने के साथ देश में वैदिक सभ्यता को आगे बढ़ाउँगा और अपने विद्यार्थियों में देशभक्ति की भावना डालूँगा। जिससे मेरा यह आर्यावर्त देश फिर से विश्वगुरु तथा सोने की चिड़िया बने।

नाम: अभिषेक कु. सिन्हा, आयु: 28 वर्ष, योग्यता: पी.एच.डी(नेट), पता: घनबाद, झारखण्ड।

सत्र में आने के पश्चात् धर्म और ईश्वर के होने का प्रमाण मिला। निश्चित होकर इसका उत्तर देने में सक्षम अनुभव कर रहा हूँ। देश के भीतर की कुरीतियों को दूर करने के लिए युवाओं को जागृत करने के लिए निकला हूँ किन्तु ऐसा मैं भाव में आकर दैवी रिश्ते के लिए करता था। राष्ट्र की भावना थी किन्तु असत्य मे राष्ट्र क्या होता है मालुम नहीं था। अब जान लिया है और राष्ट्र का कार्य कर रहा हूँ और जीवनपर्यन्त करता रहूंगा।

राष्ट्रीय आर्य निर्माण में अपने सार्मथ्य के अनुसार पूरी प्रमाणिकता से सहयोग दूंगा।

नाम: राहुल रंजन, आयु: 27 वर्ष, योग्यता: बी.एस.सी, बी.एड., कार्य: छात्र, पता: झारखण्ड।

कई आर्यों को सुना था कि वे पशु से मनुष्य बने सनातन धर्म के सिद्धान्तों को धारण करने मात्र से। आज सब हर्ष के साथ कह सकता हूँ, खुद को गौरवशाली और भाग्यवान समझता हूँ कि इस सत्र की उपस्थिति ग्रहण की। हम आर्य से हिन्दू बन गए इस दुर्भाग्य का अनुभव किया। जिन आचार्यों का और जिन अनेक बुजुर्गो का आर्शीवाद और ज्ञान मिला वह आर्यों की संगति के बिना असम्भव है, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। इस देश की पूर्व बलशाली, वैभवशाली, गौरव का ज्ञात हुआ। अब मैं पूर्णत: संकल्पित हूँ इस देश का और अवसर मिले तो पूरे विश्व का आर्यकरण करने का। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। संतोष की परिभाषा जो आचार्य जी से पता चली, उसके प्राप्त करते हुए भी और करने बाद पूर्णत: तन-मन-धन से यथासम्भव प्रयास करूंगा मृत्युपर्यन्त।

नाम: नितीश आर्य, आयु: 19 वर्ष, योग्यता: 12, पता: आसनसोल, पश्चिम बंगाल।

'' आर्य महासंघ का आह्वान''

आर्य बन्धुओं ! माताओं एवं बहनों !

वर्त्तमान में व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा सनातन धर्म की विषम परिस्थितियों से आप सभी भलीभांति परिचित हैं, इन सभी विषम परिस्थितियों का निराकरण वैदिक ज्ञान के प्रकाश में एकमात्र आर्य ही कर सकते हैं और आर्य भी तब कर सकते हैं, जब वे संगठित हों, सुव्यवस्थित हों, अनुशासित हों और सुनियोजित कार्य पद्धति के अनुसार सिद्धान्तयुक्त कार्य करने वाले हों (न कि बड़े-बड़े पद-प्रतिष्ठाओं को प्राप्त कर जड़पूजादि अवैदिक कर्म करने वाले)। इसी पवित्र भावना से **आर्य महासंघ** विश्वभर के आर्यों के संरक्षण, संवर्धन एवं एकीकरण के लिए स्थापित किया जा चुका है, जिसमें दो लाख आर्य, आर्य जगत में लाखों आर्यों का निर्माण करने वाली और सतत् उस निर्माण में कार्यरत् राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा, आर्य क्षत्रियों का संगठन राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा, आर्य परिवारों के निर्माण द्वारा आर्य संरक्षण कर रही राष्ट्रीय आर्य संरक्षिणी सभा, छात्रों में एक विधिवत् वैदिक पाठ्यक्रम के अनुसार विद्या देने में लगी राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा, आर्य राज सभा, दो सौ आर्य समाज सम्मिलित हो चुके हैं, **आर्य महासंघ** एक नाभिक (केन्द्र) की भांति सभी को तीव्र गति प्रदान करने लगा है।

आप सभी निस्वार्थ, पवित्र ऋषि भावना से ओत-प्रोत आर्यगणों, उपदेशकों, विद्वानों एवं आर्य नेताओं का हम आह्वान करते हैं कि आइए और आर्य सिद्धान्तों के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए **आर्य महासंघ** के साथ जुड़ जाइए। यदि आप किसी भी आर्य समाज, आर्यसभा, आर्य संस्था आदि से जुड़े हों तब भी आप **आर्य महासंघ** के साथ जुड़कर आर्य कार्य कर सकते हैं। यहाँ कार्य प्रधान है और कार्य का लक्ष्य देश के जन-जन का आर्यीकरण है। शहर में, ग्राम में रहने वाले हों या वनादि में रहने वाले आदिवासी-वनवासी सभी तक आर्य विचारधारा पहुंचनी चाहिए-पहुंचानी ही चाहिए। यही **आर्य महासंघ** का संकल्प है। आइए! **आर्य महासंघ** से जुड़िए! **आर्य महासंघ** के साथ चलिए! आर्य महासंघ के सदस्य बनिये! आपका स्वागत है।

निवेदक- आचार्य हनुमत्प्रसाद (अथर्ववेदाचार्य)
-अध्यक्ष, आर्य महासंघ

संध्या काल

फाल्गुन- मास, बसन्त ऋतु, कलि-5119, वि. 2075	चैत्र- मास, बसन्त ऋतु, कलि-5120, वि. 2076
(20 फरवरी 2019 से 21 मार्च 2019)	(22 मार्च 2019 से 19 अप्रैल 2019)
प्रात: काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)	प्रात: काल: 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 A.M.)
सायं काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 P.M.)	सायं काल: 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

आर्य महासंघ के उत्तर प्रदेश प्रान्तीय अधिवेशन (बड़ौत) में उपस्थित कार्यकर्ता

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।